

डॉ. रोजर ग्रीन, अमेरिकी ईसाई धर्म, सत्र 9, अमेरिकी एकतावाद का उदय। अमेरिकी क्रांति में धर्म

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन द्वारा अमेरिकी ईसाई धर्म पर दिए गए उनके व्याख्यान का सत्र 9 है, अमेरिकी एकतावाद का उदय। अमेरिकी क्रांति में धर्म।

और अब हम पांचवें नंबर पर आ गए हैं। हम चर्चों की प्रतिक्रिया के बारे में बात कर रहे हैं। कुछ चर्च अमेरिकी क्रांति से खास तौर पर प्रभावित हुए थे, या तो एंग्लिकनवाद, क्योंकि अमेरिका में उनकी संख्या में काफी गिरावट आई थी क्योंकि वे स्पष्ट रूप से ब्रिटिश समर्थक थे, या दूसरी ओर, कांग्रेगेशनलिज्म, जो काफी हद तक क्रांति के पक्ष में था और क्रांति का समर्थन करता था।

तो, हमने एंग्लिकन चर्च, रोमन कैथोलिक चर्च और अमेरिकन मेथोडिज्म के बारे में बात की। पांचवां, अन्य संप्रदाय। ऐसे अन्य संप्रदाय भी हैं जो प्रभावित नहीं हुए, और मैं उदाहरण के तौर पर केवल तीन का उल्लेख करूंगा।

और वे बैपटिस्ट, प्रेस्बिटेरियन और केकर थे। इसलिए, कुछ संप्रदायों पर किसी न किसी तरह से कोई असर नहीं पड़ा, जैसे कि बैपटिस्ट, प्रेस्बिटेरियन और केकर। 1976 में, क्रांतिकारी युद्ध की 200वीं वर्षगांठ के जश्न के रूप में, बहुत सारे प्रदर्शन और अन्य कार्यक्रम हुए।

और मुझे बहुत दिलचस्पी थी। मैं कुछ प्रदर्शनों को देखने के लिए फैनुइल हॉल गया, और यह बहुत स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हुआ कि उनमें से कई संप्रदाय, विशेष रूप से जिनका मैंने उल्लेख किया, बैपटिस्ट, केकर और प्रेस्बिटेरियन, वास्तव में प्रभावित नहीं हुए थे, लेकिन निश्चित रूप से ऐसे ईसाई थे जो कहानी के दोनों तरफ थे, जो कुछ क्रांति के समर्थक थे, कुछ ब्रिटिश समर्थक थे, लेकिन संप्रदाय स्वयं इतने गंभीर रूप से प्रभावित नहीं हुए थे। और फिर हम यहाँ सार्वभौमिकता पर आते हैं, नंबर छह, क्योंकि हमने अभी तक सार्वभौमिकता के बारे में बात नहीं की है, और इसलिए हम केवल इसका उल्लेख करेंगे।

हाँ। क्रांतिकारी युद्ध की 200वीं वर्षगांठ का जश्न। उदाहरण के लिए, बोस्टन में 1976 में उस 200वीं वर्षगांठ के अवसर पर बहुत सारे प्रदर्शन और कार्यक्रम आयोजित किए गए थे।

ठीक है, चलिए सार्वभौमिकता के बारे में बात करते हैं क्योंकि हमने अभी तक इसके बारे में बात नहीं की है, और फिर हम इस दौरान चर्च में उपस्थिति के बारे में कुछ शब्द कहेंगे। सार्वभौमिकता, जाहिर है, एक विश्वास है कि सभी लोगों को बचाया जाएगा, कि सभी लोगों के लिए नरक जैसा कुछ नहीं होगा, हर कोई स्वर्ग जाएगा, हर किसी को मुक्ति मिलेगी, हर कोई बच जाएगा। इसलिए, हमने अभी तक सार्वभौमिकता के बारे में बात नहीं की है।

यूनिवर्सलिज्म के संस्थापक जॉन मरे नामक व्यक्ति थे, और ये उनकी तिथियाँ हैं, और उन्होंने ब्रिटेन में यूनिवर्सलिज्म की स्थापना की। फिर, 1770 में, वे अमेरिका आए, और उन्होंने अमेरिका में यूनिवर्सलिस्ट संदेश फैलाना शुरू किया। यूनिवर्सलिज्म एक ऐसा संदेश था जो ईसाई धर्म में बहुत से लोगों की तर्कसंगत मान्यताओं के साथ मेल खाता था।

ईसाई धर्म एक तर्कसंगत धर्म था, एक उचित धर्म, और यह निश्चित रूप से लोगों को लगता था कि यह मानना उचित था कि ईश्वर की कृपा सभी को बचाएगी, यह मानना उचित था। सार्वभौमिकवादियों के तीन प्रकार के विचार थे जिनका मैं उल्लेख करना चाहता हूँ क्योंकि उनके पास कोई एक दृष्टिकोण नहीं था; उनके पास एक तरह से तीन प्रकार के सूक्ष्म विचार थे। पहला यह था कि मसीह ने क्रूस पर पूरी कीमत चुकाई।

इसलिए, इन लोगों ने मसीह के क्रूस की ओर देखा; उन्होंने कहा कि वह क्रूस पर मरा, वह सभी लोगों के लिए मरा, और उसने पूरा भुगतान किया। और इस पहले बिंदु के तहत, वे जिस चीज के खिलाफ प्रतिक्रिया कर रहे हैं, वह है चुने हुए लोगों की किसी भी तरह की कैल्विनवादी समझ। वे पूर्वनियति की किसी भी समझ के खिलाफ प्रतिक्रिया कर रहे हैं।

तो यह सार्वभौमिकतावादियों के मामले में नंबर एक है: मसीह सभी के लिए मरा। नंबर दो, वे मानते हैं कि जब लोग मरते हैं, तो उन्हें तुरंत भगवान की उपस्थिति में ले जाया जाएगा। इसलिए, हर कोई, कोई भी न्याय के दायरे में नहीं आएगा; वे विश्वास करेंगे, और उनका दिव्य आशीर्वाद तब शुरू होता है जब लोग मरते हैं।

नंबर तीन वह है जहाँ सूक्ष्म भाग आता है। इस मान्यता के बारे में क्या है कि ईश्वर को न कहने की मानवीय स्वतंत्रता है? इस बात को पहचानने के बारे में क्या है कि इस दुनिया में पाप नामक एक चीज़ है? उसके बारे में क्या? इस दुनिया में ईश्वर के विरुद्ध विद्रोह करने वाले पापी लोगों के बारे में क्या? वे कहानी में कैसे फिट होते हैं? खैर, सार्वभौमिकवादियों का मानना था कि मृत्यु के बाद, शुद्धिकरण का समय होगा। यह वास्तव में रोमन कैथोलिक धर्म का शुद्धिकरण नहीं था, लेकिन शुद्धिकरण की एक अवधि होगी जिसके बाद वे अपने मृत्यु के बाद के अनुभव में किसी बिंदु पर, किसी बिंदु पर जाकर ईश्वर से मिलने में सक्षम होंगे।

लेकिन शुद्धिकरण का यह समय शाश्वत नहीं है। यह नर्क नहीं है। यह शाश्वत दंड नहीं है।

यह ईश्वर से मिलने की तैयारी में शुद्धिकरण की तरह है। इसलिए, जब आप यूनिवर्सलिस्टों को देखते हैं, तो उनके पास तीन तरह के बिंदु होते हैं जिन्हें वे बनाने की कोशिश कर रहे हैं। 1790, क्रांतिकारी युद्ध के बाद, यूनिवर्सलिस्टों ने एक सम्मेलन आयोजित किया।

वे काफी मजबूत थे। मुझे नहीं पता कि वास्तव में सम्मेलन में कितने लोग थे। मुझे इसकी जांच करनी चाहिए।

लेकिन वे एक सम्मेलन आयोजित करने के लिए पर्याप्त मजबूत थे। तो, उन्होंने वह सम्मेलन कहाँ आयोजित किया? फिलाडेल्फिया में। फिलाडेल्फिया शहर, भाईचारे के प्यार में।

ऐसा लगता है कि हर कोई फिलाडेल्फिया जाकर यूनिवर्सलिस्ट दुनिया में अपने सम्मेलन आयोजित करना पसंद करता था। ठीक है। मैं बस, आप अपनी रूपरेखा में देख सकते हैं, मैं क्रांति के समय चर्च में उपस्थिति के बारे में एक शब्द कहना चाहता हूँ, और फिर हम यहाँ आगे बढ़ेंगे।

ठीक है। क्रांति के समय चर्च में जाना। दो चरम सीमाएं हैं जिनसे बचना चाहिए।

और सच शायद कहीं बीच में है। मैं कहूंगा कि एक चरमपंथी, चर्च में जाने के मामले में पौराणिक चरमपंथी है। पौराणिक चरमपंथी से बचना चाहिए कि हर कोई चर्च जाता था।

ये सभी लोग हर रविवार को चर्च में जाते थे, और वे बहुत ही धार्मिक विश्वासी थे। वे सभी अलग-अलग संप्रदायों से संबंधित थे, इसलिए पूरी अमेरिकी आबादी चर्च में थी। खैर, ऐसा कुछ भी नहीं है जो इसका समर्थन कर सके। हमने उल्लेख किया है कि इनमें से कई लोग नास्तिक थे।

वे नियमित रूप से चर्च नहीं जाते थे, इत्यादि। इसलिए, चर्च में जाने के मामले में यह पौराणिक चरम सीमा होगी जिससे बचना होगा। मुझे नहीं लगता कि हम उस रास्ते पर जाना चाहेंगे।

अब, दूसरा चरमपंथ जिससे बचना चाहिए वह है चर्च में उपस्थिति के बारे में संकीर्ण दृष्टिकोण। और संकीर्ण दृष्टिकोण कहता है कि आप चर्च में उपस्थिति को केवल वास्तविक चर्च सदस्यता से ही माप सकते हैं। और कुछ जगहों पर, चर्च की सदस्यता काफी कम थी।

लेकिन यह एक संकीर्ण दृष्टिकोण होगा क्योंकि मामले की सच्चाई यह है कि बहुत से लोग जो चर्च के सदस्य नहीं बने, वे चर्च जाते थे। इसलिए, बहुत से लोग चर्च जा रहे थे, लेकिन वे किसी विशेष संप्रदाय में शामिल नहीं हुए थे। वे स्थानीय मण्डली चर्च या स्थानीय एंग्लिकन चर्च या जो भी हो, जा रहे थे।

इसलिए, आम तौर पर, विद्वानों ने पाया है कि चर्च में उपस्थिति चर्च की सदस्यता से कहीं ज़्यादा है। इसलिए, आम तौर पर, ऐसा लगता है कि ऐसा ही है। अगर मैं हमें 1780 या उसके आस-पास के बारे में एक आँकड़ा दूँ, तो ऐसा लगता है कि 1780 में, अमेरिकी क्रांतिकारी युद्ध के बाद, और हमारे एक नए राष्ट्र के रूप में बसने के बाद, लगभग तीन-पाँचवाँ आबादी नियमित रूप से चर्च जाती थी।

तो, लगभग तीन-पाँचवाँ हिस्सा आबादी चर्च में जाती है। क्रांतिकारी युद्ध के समय यह कम हो गया था, लेकिन अब यह फिर से बढ़ने लगा है। और अब, बाद में द सेकंड ग्रेट अवेकनिंग नामक एक व्याख्यान में कुछ होने वाला है, लेकिन हम उस पर बाद में चर्चा करेंगे।

ठीक है, बस यह सुनिश्चित करने के लिए कि हम सभी यहाँ पर आ गए हैं, आइए व्याख्यान संख्या छह पर चलते हैं, अमेरिकी यूनिटेरियनवाद का उदय। हम पृष्ठभूमि देंगे, और फिर हम अमेरिका में यूनिटेरियनवाद के बारे में बात करेंगे, विशेष रूप से यहाँ बोस्टन में। तो यह व्याख्यान संख्या छह है, और परीक्षा व्याख्यान संख्या छह तक और उसके साथ कवर की जाती है।

इसलिए मैं चाहता हूँ कि हम सोमवार को यहाँ होते। मैं यह व्याख्यान दे सकता था, और मैं चाहता हूँ कि आप परीक्षा देने से लगभग एक सप्ताह पहले अपना व्याख्यान समाप्त कर लें ताकि आपको अध्ययन करने के लिए पर्याप्त समय मिल सके। लेकिन हम ठीक चल रहे हैं। ठीक है, तो सबसे पहले, यहाँ पृष्ठभूमि है।

खैर, यूनिटेरियनवाद क्या है? यूनिटेरियनवाद, बेशक, त्रिदेवों में अविश्वास और ईश्वर की एकता में विश्वास है। यूनिटेरियनवाद एकेश्वरवाद पर जोर देना चाहता है, और ऐसा करने के लिए, यूनिटेरियन मानते हैं कि त्रिदेव एकेश्वरवाद के खिलाफ बोलते हैं। अब, शुरुआती चर्च में यूनिटेरियन थे जो खुद को यूनिटेरियन नहीं कहते थे, लेकिन शुरुआती चर्च में यूनिटेरियनवाद ऐसे लोगों के इर्द-गिर्द था जो त्रिदेवों को नकार रहे थे और सिर्फ शुद्ध एकेश्वरवाद को अपना रहे थे, लेकिन फिर भी खुद को ईसाई कहते थे।

लेकिन जिस यूनिटेरियनवाद में हम रुचि रखते हैं, यूनिटेरियनवाद जो वास्तव में अमेरिकी जीवन और संस्कृति में आगे आता है, वास्तव में 16वीं शताब्दी में शुरू होता है, और यह माइकल सर्वेटस नाम के एक व्यक्ति से शुरू होता है। यह वह नाम है जिसे आप सुधार के समय यूनिटेरियनवाद की शुरुआत से जोड़ेंगे। अब, माइकल सर्वेटस एक यूनिटेरियन थे और उन्होंने जॉन कैल्विन के खिलाफ तर्क दिया, जो एक एकेश्वरवादी भी थे, लेकिन जॉन कैल्विन, निश्चित रूप से, त्रिदेव में विश्वास करते थे।

तो, माइकल सर्वेटस के बारे में संक्षेप में बता दूँ, माइकल सर्वेटस 1533 में जिनेवा आए थे। यहीं पर कैल्विन जिनेवा में उपदेश और शिक्षा दे रहे थे। जिनेवा सुधार के महान केंद्रों में से एक बन गया था।

माइकल सर्वेटस, अब, मैं यह सुनिश्चित करना चाहता हूँ कि हम इसे समझें क्योंकि भले ही यह सीधे इस पाठ्यक्रम से संबंधित न हो, कैल्विन को अक्सर माइकल सर्वेटस को सूली पर जलाने के लिए दोषी ठहराया जाता है। कैल्विन ने ऐसा नहीं किया। जो लोग कहते हैं कि कैल्विन ने इस आदमी को सूली पर जला दिया, वे अपना इतिहास नहीं जानते।

कैल्विन ने माइकल सर्वेटस को जिनेवा न आने के लिए मनाने की कोशिश की। उसने सोचा कि अगर सर्वेटस जिनेवा आया, तो सर्वेटस मुश्किल में पड़ जाएगा। इसलिए, उसने उसे जिनेवा न आने के लिए मनाने की कोशिश की।

सर्वेटस जिनेवा आना चाहता था। वह कैल्विन के साथ बहस करना चाहता था। सर्वेटस को अधिकारियों ने गिरफ्तार किया, न कि नागरिक अधिकारियों ने, न कि कैल्विन ने, और फिर सर्वेटस को सूली पर जला दिया गया।

अब, हमें अपने दिमाग को 16वीं और 17वीं सदी में वापस ले जाना होगा। उस समय लोगों को सूली पर क्यों जलाया जाता था? आम भलाई को बचाने के लिए, समाज को बचाने के लिए, सामाजिक व्यवस्था को, और विधर्मी सामाजिक व्यवस्था के लिए खतरा हैं। इसलिए, माइकल सर्वेटस को इसी कारण से सूली पर जलाया गया था, कैल्विन द्वारा नहीं, बल्कि नागरिक अधिकारियों द्वारा।

इसलिए, हम सर्वेंट्स का जिक्र करना चाहते हैं। हालाँकि, जिस व्यक्ति में हमें सबसे ज़्यादा दिलचस्पी है, वह है, या दो नाम हैं, लेकिन उनमें से एक है जॉन बिडल। क्योंकि जॉन बिडल, यहाँ जॉन बिडल की तारीखें दी गई हैं।

जॉन बिडल ने इंग्लैंड में यूनिटेरियन सोच को संगठित करना शुरू किया। हाँ, ठीक है, हाँ, हाँ। कैल्विन, कहानी लंबी है, लेकिन कैल्विन जिनेवा में था, और फिर उन्होंने उसे शहर से बाहर निकाल दिया।

लेकिन फिर, जब उन्होंने देखा कि कैसे उनके धर्मशास्त्र और उनके उपदेशों का जिनेवा की संस्कृति और दुनिया पर इतना अच्छा प्रभाव पड़ा है, तो उन्होंने उन्हें वापस आमंत्रित किया। इसलिए, वह एक ऐसे व्यक्ति बन गए जिन्होंने एक तरह से जिनेवा में एक नैतिक, सांस्कृतिक स्वर स्थापित करने में मदद की। यह एक धर्मतंत्र नहीं था।

वह किसी भी तरह का सिविल सेवक नहीं था। वह एक उपदेशक था और उसका अपना चर्च था, लेकिन वह महान था; उसने जिनेवन के जीवन को बहुत प्रभावित किया। यह एक प्रोटेस्टेंट-सुधारित शहर बन गया।

और वास्तव में अन्य लोगों ने, उन्होंने जिनेवा अकादमी की स्थापना की ताकि यूरोप भर के लोग जिनेवा अकादमी में आकर अध्ययन कर सकें और उनकी सोच और उनके विचारों को अपने देशों में वापस ले जा सकें और इसी तरह। तो, जिनेवा एक आदर्श प्रकार का सुधारित शहर है, और नागरिक अधिकारी नैतिकता और इसी तरह के अन्य मामलों में नागरिक जीवन पर उनके प्रभाव के लिए कैल्विन के आभारी थे। क्या इससे कुछ मदद मिलती है? जिनेवा एक सुधारित शहर के रूप में कितने समय तक चला? खैर, मेरा मतलब है, आज भी इसकी एक मजबूत प्रोटेस्टेंट विरासत है, मैं कहूँगा, लेकिन यह निश्चित रूप से कायम रहा; मेरा मतलब है, कुछ प्यूरिटन ने जिनेवा में शरण ली।

क्योंकि यह एक बहुत ही मजबूत प्रोटेस्टेंट कैल्विनिस्ट शहर था, वे कैल्विनिस्ट थे। उन्होंने सर्वेंट्स को न आने की चेतावनी दी क्योंकि उन्हें पता था कि अगर सर्वेंट्स जिनेवा आया तो सिविल अधिकारी उसके साथ क्या करेंगे। सर्वेंट्स था, सर्वेंट्स आया, कैल्विन ने उसे कैद किए जाने पर भी दौरा किया।

वह जेल में उससे मिलने गया। और उसने वास्तव में सोचा कि, आप जानते हैं, वह चाहता था कि सर्वेंट्स परमेश्वर को उसकी पूर्णता में देखे, उसकी त्रिव पूर्णता में। इसलिए उसने सर्वेंट्स के साथ उस मंत्रालय को करने की कोशिश की, लेकिन यह काम नहीं आया।

सिविल अधिकारियों ने उसे सूली पर जला दिया। ठीक है, जॉन बिडल। जॉन बिडल वह व्यक्ति है जो हमारे लिए दिलचस्प है क्योंकि वह वही है जिसने इंग्लैंड में यूनिटेरियनवाद को आकार दिया।

अब, 17वीं सदी में यूनिटेरियनवाद अंग्रेजी तर्कवादी समाज में बहुत अच्छी तरह से फिट बैठता है। इसलिए, यूनिटेरियनवाद और तर्कवाद वास्तव में बहुत खूबसूरती से एक साथ चलते हैं

क्योंकि यूनिटेरियन ने ईसाई धर्म को बहुत ही तर्कसंगत तरीके से समझाया। अब, इंग्लैंड में जो हुआ वह यह है कि यह बढ़ना शुरू हो गया है।

इंग्लैंड में यह वास्तव में दो कारणों से मजबूत होने लगा, बिडल के नेतृत्व में। पहला कारण: हाँ, दोनों ही कारणों से नहीं, लेकिन बिडल ने इसे शुरू किया।

लेकिन पहला कारण यह है कि बिडल के अधीन, यह एक तरह का मिशनरी प्रयास बन गया। यूनिटेरियन ने पूरे इंग्लैंड में मिशनरी बनने की कोशिश की ताकि लोगों को यह विश्वास दिलाया जा सके कि उन्हें यूनिटेरियन होना चाहिए। और वास्तव में, उन्होंने बहुत से बैपटिस्ट और प्रेस्बिटेरियन को मना लिया जो यूनिटेरियनवाद में चले गए।

तो, बिडल के अधीन, मिशनरी की तरह- मुझे नहीं पता, मिशनरी आवेग- ने इंग्लैंड में यूनिटेरियनवाद को फैलाने में मदद की। ठीक है। इंग्लैंड में इसके बढ़ने का दूसरा कारण बिडल के दिनों के बाद है, लेकिन यह हमें एक और नाम की ओर ले जाता है, और उसका नाम है डॉ. जोसेफ प्रीस्टली।

ठीक है। अब, आप जोसेफ प्रीस्टली का नाम क्यों जानते हैं? वह नाम आपको क्यों जाना-पहचाना लगता है? क्योंकि वह उस समय इंग्लैंड में एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक थे। वह एक बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति थे, डॉ. जोसेफ प्रीस्टली।

तो, वह वहाँ है। जैसा कि एक लेखक ने कहा, वह एक रसायनज्ञ, एक विचारक, एक उचित व्यक्ति है। जोसेफ प्रीस्टली, भले ही वह एंग्लिकनवाद में पले-बढ़े थे, एक यूनिटेरियन बन गए।

तो, यह व्यक्ति जो इंग्लैंड में बहुत बड़ा कद का था, एक यूनिटेरियन बन गया और यहां तक कि एक यूनिटेरियन मंत्री भी बन गया। और इसने वास्तव में यूनिटेरियनवाद के कारण को आगे बढ़ाया। और यूनिटेरियनवाद के लिए इस तरह की अंग्रेजी पृष्ठभूमि निश्चित रूप से अमेरिका में आने वाली है।

वैसे, इसे अंततः 1813 में इंग्लैंड में मान्यता मिली। 1813 में इसे एक वैध संप्रदायिक धर्म के रूप में मान्यता दी गई। इसलिए, यूनिटेरियनवाद बिडल और फिर प्रीस्टली के माध्यम से उस आकार को लेता है।

ठीक है। अब, फिर भी, पृष्ठभूमि के संदर्भ में, बिडल के दिनों से लेकर प्रीस्टली के दिनों तक यूनिटेरियन सोच में बदलाव आया है। तो मुझे उस बदलाव के बारे में बात करने दें क्योंकि अगर हम उस बदलाव को नहीं समझते हैं, तो हम यूनिटेरियनवाद के इतिहास के संदर्भ में गलत धारणा बना लेंगे।

प्रारंभिक यूनिटेरियन और प्रीस्टली भी इसके अच्छे उदाहरण हैं। तो, जैसा कि आप देख सकते हैं, वह बिडल के काफी बाद में आता है। लेकिन प्रारंभिक यूनिटेरियन बाइबल पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करते थे।

बाइबल उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण थी। और वे धर्मग्रंथ से बहुत कुछ पढ़ते थे। वे धर्मग्रंथ से बहुत प्रचार करते थे।

उन्होंने धर्मग्रंथों से गीत गाए क्योंकि धर्मग्रंथों ने, आप जानते हैं, उनके लिए, धर्मग्रंथों ने इस एक ईश्वर पर जोर दिया जो प्रेम का ईश्वर था। अब, बेशक, उन्हें बाइबिल के पाठ के साथ कठिनाइयाँ थीं, खासकर अवतार और फिर यीशु के चमत्कार, क्रूस पर उनकी मृत्यु, उनके पुनरुत्थान और उनके स्वर्गारोहण के साथ। उन्हें बाइबिल के पाठ के साथ कठिनाइयाँ थीं, लेकिन उन्होंने फिर भी बाइबिल के पाठ के माध्यम से संघर्ष करने की कोशिश की।

वे बाइबल के साथ काम करने की कोशिश करते रहे, लेकिन फिर भी वे अपनी यूनिटेरियन मान्यताओं के प्रति दृढ़ थे। ठीक है, अब, जैसे-जैसे अन्य यूनिटेरियन शुरू हुए, अन्य पीढ़ियाँ यूनिटेरियनवाद में आने लगीं, और बाइबल का इस्तेमाल कम होता गया। अंत में, बहुत से यूनिटेरियन ने फैसला किया कि हमें अब बाइबल की ज़रूरत नहीं है।

हम जो कुछ भी मानते हैं उसे तर्क से, हमारी तर्कसंगत क्षमताओं के उपयोग से, और हमारे तर्कों के उपयोग से समझा जा सकता है। इसलिए, बाइबल सामने आ गई है। और इसलिए कुछ समय के लिए यूनिटेरियनवाद इस पुराने विंग, इस अधिक रूढ़िवादी विंग, इन बाइबिल यूनिटेरियन, और नए विंग, इन अधिक उदार लोगों, इन तर्कसंगत यूनिटेरियन के बीच विभाजित हो गया।

इसलिए, कुछ समय के लिए, यूनिटेरियनवाद में विभाजन हो गया, लेकिन अंततः, बाइबिल शाखा समाप्त हो गई। अंततः, बाइबिल शाखा समाप्त हो गई, और यूनिटेरियनवाद, इंग्लैंड में, एक सख्त तर्कसंगत धर्म बन गया। अब, जो होता है, निश्चित रूप से, हमारे हित के लिए, जो होता है, निश्चित रूप से, यह अमेरिका में आना शुरू होता है।

तो यह अमेरिका में यूनिटेरियनवाद है, यह नंबर बी है। ठीक है, अमेरिका में हमारे लिए सबसे पहला व्यक्ति जो दिलचस्पी का विषय है, वह जेम्स फ्रीमैन नाम का एक आदमी है। और जेम्स फ्रीमैन की तिथियाँ हैं, 1759 से 1835 तक। ठीक है, जेम्स फ्रीमैन के बारे में लंबी कहानी संक्षेप में।

जेम्स फ्रीमैन का एक चर्च था, मुझे इन्हें क्रम में रखना चाहिए था, लेकिन ओह हाँ, यहाँ यह है, जेम्स फ्रीमैन का बोस्टन में किंग्स चैपल नामक एक चर्च था। तो, वह किंग्स चैपल के पादरी हैं। आप किंग्स चैपल को पहचान लेंगे, है न? क्योंकि आप सभी वहाँ गए हैं। क्या कोई ऐसा है जो फ्रीडम ट्रेल पर नहीं गया है? क्या इस कमरे में कोई ऐसा है? आप यह कबूल कर सकते हैं; यह ठीक है, भले ही आप दो, तीन, चार साल से गॉर्डन रहे हों।

क्या आप बोस्टन में फ्रीडम ट्रेल पर गए हैं? आपको जाना ही होगा, ठीक है, नहीं, ठीक है। खैर, हम फ्रीडम ट्रेल के कुछ हिस्सों पर चलने जा रहे हैं। तो, स्वीकारोक्ति आत्मा के लिए अच्छी है।

इसलिए, हम कुछ खास जगहों पर चलेंगे, अगर आप फील्ड ट्रिप पर जा रहे हैं, तो हम फ्रीडम ट्रेल के कुछ खास हिस्सों पर चलेंगे। यह फ्रीडम ट्रेल पर प्रमुख है। अगर आप फ्रीडम ट्रेल पर चले हैं, तो आप इस चर्च से होकर गुजरे होंगे।

यह प्रमुख है। यह किंग्स चैपल है। जेम्स फ्रीमैन किंग्स चैपल में एंग्लिकन पादरी थे।

1785 में, यह एक महत्वपूर्ण तारीख है, और आप उस तारीख पर ध्यान देना चाहेंगे। 1785 में, यह जेम्स फ्रीमैन के अधीन, उनके पादरी के अधीन, उनके पुजारी के अधीन अमेरिका में पहला यूनिटेरियन चर्च बन गया। तो यहाँ आपके पास एक एंग्लिकन चर्च है, जो फ्रीमैन के निर्देशन में एक मण्डली के रूप में, एंग्लिकनवाद में आगे बढ़ता है। और इसलिए यहीं से यह सब शुरू होता है, यहीं बोस्टन में।

यहीं पर सब कुछ है। यह एक एंग्लिकन चर्च था, और यह एक यूनिटेरियन चर्च था, और यह अमेरिका में पहला यूनिटेरियन चर्च बन गया। अब, अमेरिकी ईसाई धर्म के संदर्भ में उल्लेख करने वाला दूसरा व्यक्ति संभवतः सबसे महत्वपूर्ण है जब यूनिटेरियनवाद को आकार देने की बात आती है।

और उसका नाम विलियम एलेरी चैनिंग है। और यह युवा विलियम एलेरी चैनिंग की तस्वीर है। ठीक है।

विलियम एलेरी चैनिंग का बोस्टन में फेडरल स्ट्रीट कांग्रेगेशनल चर्च नामक एक चर्च था। तो, फेडरल स्ट्रीट कांग्रेगेशनल चर्च। अब, आज, इसे अर्लिग्टन स्ट्रीट कांग्रेगेशनल चर्च कहा जाता है, और यहाँ यह है, लेकिन यह फेडरल स्ट्रीट कांग्रेगेशनल चर्च है जब विलियम एलेरी चैनिंग पादरी और रेक्टर थे।

हम चलते हैं। यह अब फेडरल स्ट्रीट है जिसे अब अर्लिग्टन स्ट्रीट कहा जाता है। इसलिए अब इसे अर्लिग्टन स्ट्रीट कांग्रेगेशनल चर्च कहा जाता है।

हालाँकि, आज यह एक यूनिटेरियन चर्च है क्योंकि विलियम एलेरी चैनिंग ने उस चर्च को, जो मूल रूप से मण्डली वाला था, ले लिया और उसे यूनिटेरियनवाद में बदल दिया। चर्च के ठीक सामने सड़क के उस पार विलियम एलेरी चैनिंग की यह मूर्ति है। इसलिए, हम अपनी एक फील्ड ट्रिप पर रुकेंगे और देखेंगे, पहली नहीं, बल्कि दूसरी। हम चर्च के पास से चलेंगे, और हम विलियम एलेरी चैनिंग की मूर्ति भी देखेंगे।

तो, चलिए चैनिंग के लिए एक नाम देते हैं, मुझे नहीं पता। विलियम एलेरी चैनिंग अमेरिकी यूनिटेरियनवाद के जनक हैं। वह वही व्यक्ति हैं जिन्होंने अपने चर्च से शुरुआत करके अमेरिकी यूनिटेरियनवाद को आकार दिया।

ठीक है। तो, विलियम एलेरी चैनिंग के साथ, तीन महत्वपूर्ण तिथियाँ हैं। पहली तिथि 1815 है क्योंकि 1815 वह वर्ष है जब उन्होंने, मुझे उनके चर्च की एक तस्वीर वापस डालने दीजिए।

1815 में, उन्होंने अपने चर्च को यूनिटेरियन चर्च बनने के लिए प्रेरित किया। इसलिए यह चैनिंग के जीवन में उनके मंत्रालय के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण तारीख है, उनके वास्तव में अमेरिकी

यूनिटेरियनवाद को आकार देने में एक नेता बनने के संदर्भ में, जिस तरह से जेम्स फ्रीमैन नहीं थे। जेम्स फ्रीमैन विलियम एलेरी चैनिंग से पहले के हैं।

ठीक है। दूसरी तारीख 1816 है। 1816 एक बहुत ही महत्वपूर्ण तारीख है क्योंकि 1816 में हार्वर्ड विश्वविद्यालय ने एक दिव्यता स्कूल की स्थापना की थी। यह मूल रूप से एक यूनिटेरियन दिव्यता स्कूल था, और विलियम एलेरी चैनिंग ने वहां उपदेश दिया होगा।

उन्होंने वहाँ पढ़ाया होगा और इसी तरह। इसलिए, उनका हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के यूनिटेरियन डिविनिटी स्कूल से जुड़ाव रहा होगा। अब, जब हम हार्वर्ड के बारे में बात कर रहे हैं, तो हार्वर्ड के इतिहास को एक मिनट के लिए आगे बढ़ाते हैं, हार्वर्ड, विश्वविद्यालय प्र्यूरिटन प्रचारकों को प्रशिक्षित करने के लिए एक जगह के रूप में शुरू हुआ, याद है? और क्या आपको वह तारीख याद है? 1636, जॉन हार्वर्ड ने हार्वर्ड यूनिवर्सिटी शुरू करने के लिए अपनी लाइब्रेरी दे दी।

अब हम 1816 की तारीख पर आते हैं, और यह हार्वर्ड में डिविनिटी स्कूल की स्थापना है, लेकिन एक यूनिटेरियन डिविनिटी स्कूल के रूप में। हार्वर्ड डिविनिटी स्कूल एक बहुत ही दिलचस्प जगह है। अब, मैं हार्वर्ड के बारे में तीसरी बात कहने जा रहा हूँ, और फिर हम विलियम एलेरी चैनिंग के लिए तीसरी तारीख पर वापस आएँगे, लेकिन हार्वर्ड डिविनिटी स्कूल एक बहुत ही दिलचस्प जगह है।

वहाँ सभी तरह के लोग जाते हैं। मैं हार्वर्ड डिविनिटी स्कूल के ग्रेजुएशन समारोह में गया हूँ, और यह एक बहुत ही आकर्षक जगह है क्योंकि एक छात्र आएगा और वह छात्र यूनिटेरियन होगा, और दूसरा छात्र आएगा, और वह छात्र यहूदी होगा, और एक और छात्र आएगा, और वह छात्र मूल अमेरिकी होगा जिसकी धार्मिक पहचान शायद मूल अमेरिकी जैसी होगी। एक और छात्र आएगा और वह बौद्ध हो सकता है, एक और छात्र ताओवादी हो सकता है, लेकिन वे सभी हार्वर्ड डिविनिटी स्कूल से डिग्री प्राप्त कर रहे हैं, जो दिलचस्प है।

लेकिन सच तो यह है कि बहुत से इंजीलवादी हार्वर्ड डिविनिटी स्कूल गए हैं। हमारे पास हार्वर्ड डिविनिटी स्कूल में पढ़ने वाले छात्र हैं। वे शायद आज हार्वर्ड डिविनिटी स्कूल में इंजीलवादी हैं।

इसलिए, बहुत से इंजीलवादी हार्वर्ड गए हैं। अब, यहाँ 1816 में स्थापित एक बहुत ही उदार यूनिटेरियन सेमिनरी है। सभी प्रकार के लोग डिग्री प्राप्त करने के लिए वहाँ जाते हैं, लेकिन फिर भी इंजीलवादी वहाँ जाते हैं।

तो, कुछ साल पहले, एक दिलचस्प बहस हुई थी। यह लगभग 10 साल पहले की बात है। दरअसल, मेरे पास वह लेख है, इसलिए मैं वास्तव में तारीख देख सकता हूँ।

यह था, चलो देखते हैं, शायद यह जितना मैंने सोचा था उससे ज़्यादा लंबा है। हाँ, यह लंबा है। यह 1983 है।

ठीक है, ज़िंदगी बहुत तेज़ी से आगे बढ़ती है। तो, 1983. तो, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी और हार्वर्ड डिविनिटी स्कूल में एक चर्चा हुई।

और चर्चा यह थी कि, चूंकि हमारे पास हार्वर्ड डिविनिटी स्कूल में जाने वाले बहुत से इंजीलवादी हैं, इसलिए क्या हमें हार्वर्ड डिविनिटी स्कूल में इंजीलवादी कुर्सी रखनी चाहिए? क्या हमें यहां इंजील, ईसाई, प्रोटेस्टेंट और इंजीलवादी धर्मशास्त्र पढ़ाने के लिए किसी को लाना चाहिए? और जवाब था, हां, हमें हार्वर्ड डिविनिटी स्कूल में इंजीलवादी कुर्सी की जरूरत है। और हार्वर्ड डिविनिटी स्कूल में कुर्सी भरने वाले पहले व्यक्ति का नाम मार्क नोल था। अब, आप अन्य रीडिंग और इसी तरह की अन्य बातों से उनके नाम से परिचित हो सकते हैं।

उस समय वे व्हीटन कॉलेज में थे। अब वे नोटे डेम में हैं, लेकिन एक बहुत ही प्रतिष्ठित चर्च इतिहासकार और अमेरिकी चर्च इतिहासकार हैं। मार्क नोल हार्वर्ड डिविनिटी स्कूल में इवेंजेलिकल चेयर के पहले अध्यक्ष बने।

मैं उनके उद्घाटन भाषण और इस इवेंजेलिकल चेयर के सभी समारोहों में जा सका। इसलिए, यह दिलचस्प है कि, एक अर्थ में, एक इवेंजेलिकल चेयर की स्थापना करके, हार्वर्ड डिविनिटी स्कूल विश्वविद्यालय की जड़ों, प्यूरिटन जड़ों की ओर वापस जा रहा था। इसलिए, यह बहुत दिलचस्प है कि यह सब हुआ।

ऐसे कई लोग रहे हैं; जॉर्ज मार्सडेन एक और बहुत प्रसिद्ध अमेरिकी इतिहासकार और कट्टरवाद और इंजीलवाद के इतिहासकार हैं। वह उस कुर्सी पर रहे हैं। इसलिए, यह एक दिलचस्प इतिहास रहा है।

तो खैर, यहीं पर हार्वर्ड डिविनिटी स्कूल की स्थापना हुई थी। माफ़ करें? मार्क नोल। नहीं।

अब एक आदमी है जो बोस्टन यूनिवर्सिटी से मेथोडिस्ट है। मुझे लगता है उसका नाम डेविड हेम्पटन है। मुझे यकीन करने के लिए इस पर जाँच करनी होगी।

लेकिन मुझे लगता है कि यह एक साल की कुर्सी है। तो, जो व्यक्ति वहाँ जाता है वह एक साल के लिए वहाँ रहता है, इंजील धर्मशास्त्र पढ़ाता है, और इसी तरह। और फिर यह हर साल बदलता रहता है।

लेकिन जिन लोगों को कुर्सी मिली है, वे बहुत ही उल्लेखनीय विद्वान हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है। हाँ, मूल रूप से यूनिटेरियन, आप शायद यूनिटेरियन चर्च में जाकर कोई उपदेशक ढूँढ़ सकते हैं। और हम बस एक मिनट में इस बारे में बात करने जा रहे हैं।

लेकिन आपको शायद कोई उपदेशक मिल जाए जो कुछ शास्त्रों का इस्तेमाल कर रहा हो, शायद प्रभु की प्रार्थना, या शायद कुछ आशीर्वाद वगैरह। लेकिन हार्वर्ड डिविनिटी स्कूल में इंजील चेयर, वह व्यक्ति इंजील धर्मशास्त्र पढ़ा सकता है। यही काम करने के लिए उन्हें वहाँ रखा गया था।

इसलिए, उन्होंने उसे इंजील धर्मशास्त्र और बाइबल के अधिकार और सभी प्रकार की चीजों को सिखाने के लिए वहाँ बुलाया। हाँ, इसलिए हम इस पर आनन्दित हैं। तो नहीं, यह अब नहीं है।

नहीं, इसकी स्थापना 1816 में एक यूनिटेरियन संस्थान के रूप में की गई थी। अब, हार्वर्ड डिविनिटी स्कूल में, मुझे आज इसकी जांच करने के लिए उनके मिशन स्टेटमेंट या जो कुछ भी है, उसे देखना होगा। लेकिन वे उन सभी का स्वागत करते हैं जो हार्वर्ड डिविनिटी स्कूल में आकर पढ़ना चाहते हैं।

आपको यूनिटेरियन होने की ज़रूरत नहीं है। हार्वर्ड डिविनिटी स्कूल में पढ़ाने के लिए प्रोफेसरों को यूनिटेरियन होने की ज़रूरत नहीं है। हाँ।

हम बस एक मिनट में उस पर आएँगे। क्यों न मैं उस पर कायम रहूँ, और हम उस पर आएँ? मुझे विलियम एलेरी चैनिंग के लिए तीसरी तारीख बता दें।

याद है हमने कहा था कि हमारे पास उनके लिए तीन तारीखें हैं? हमारे पास वह तारीख थी जब उनका चर्च यूनिटेरियन बना, 1815. हमारे पास 1816 में हार्वर्ड डिविनिटी स्कूल की स्थापना की तारीख थी. तीसरी तारीख वाकई बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि तीसरी तारीख वह है जब विलियम एलेरी चैनिंग ने अमेरिकन यूनिटेरियन एसोसिएशन की स्थापना की थी.

अमेरिकन यूनिटेरियन एसोसिएशन यूनिटेरियन चर्चों का एक संघ था जो एक साथ आम जमीन तलाशते थे, अपने धर्मशास्त्र पर चर्चा करते थे, और इसी तरह के अन्य काम करते थे। इसलिए इसकी स्थापना 1825 में हुई थी। और विलियम एलेरी चैनिंग इसके संस्थापक थे।

दरअसल, जब हम बीकन हिल में होते हैं, तो वहां एक छोटी सी पट्टिका होती है। इसे देखना थोड़ा मुश्किल है, इसलिए लोग हर दिन इसके पास से गुजरते हैं और इस पर ध्यान नहीं देते। लेकिन एक छोटी सी पट्टिका है जो आपको बताती है कि विलियम एलेरी चैनिंग उस घर में रहते थे, जब वे बोस्टन में इस चर्च के पादरी थे, जो बीकन हिल में ही है।

तो, हम इस पर बात नहीं करेंगे। तो, अमेरिकन यूनिटेरियन एसोसिएशन की स्थापना 1825 में हुई थी। तो ये तीन तारीखें वाकई महत्वपूर्ण हैं।

ठीक है, अब हम अभी भी अमेरिका में यूनिटेरियनवाद पर हैं। तो मैं यहाँ एक और नाम पर वापस आता हूँ। और वह नाम है राल्फ वाल्डो इमर्सन और एक आंदोलन जिसे ट्रान्सेंडेंटलिज़्म कहा जाता है।

ठीक है, तो सवाल यह है कि ट्रान्सेंडेंटलिज़्म क्या है? ट्रान्सेंडेंटलिज़्म यूनिटेरियनिज़्म से निकला एक आंदोलन था। दूसरे शब्दों में, ट्रान्सेंडेंटलिस्ट मूल रूप से यूनिटेरियन थे। यही उनका चर्च, उनका संप्रदाय था।

वे उस तरह की परंपरा में पले-बढ़े थे। लेकिन राल्फ वाल्डो इमर्सन के साथ वे सबसे प्रसिद्ध ट्रान्सेंडेंटलिस्ट हैं, दोनों तरह से धार्मिक और साहित्यिक दृष्टि से। इसलिए मैंने यहाँ राल्फ वाल्डो इमर्सन का उल्लेख किया।

आप उन्हें अन्य पाठ्यक्रमों से जानते हैं। लेकिन राल्फ वाल्डो इमर्सन के साथ, हमारे पास ट्रांसेंडेंटलिज़्म नामक एक आंदोलन है। अब, मैं यहाँ ट्रांसेंडेंटलिज़्म के बारे में पाँच बिंदु बताना चाहता हूँ।

सबसे पहले, ट्रांसेंडेंटलिज़्म वास्तव में यूनिटेरियन तर्कवाद की अस्वीकृति थी। यूनिटेरियनवाद बहुत तर्कसंगत, बहुत उचित हो गया था। यह तर्क द्वारा अपने उद्देश्य का बचाव करने जैसा है, आप जानते हैं।

और ऐसे लोग थे जो यूनिटेरियनवाद में पले-बढ़े थे और यूनिटेरियनवाद के उस तरह के बहुत सख्त तर्कवाद से तंग आ चुके थे। दूसरे, ट्रांसेंडेंटलिज़्म ने ज्ञानोदय आंदोलन को अपनाने के बजाय, जो तर्कसंगतता और तर्कसंगतता का आंदोलन था, रोमांटिक आंदोलन को अपनाया। इसलिए ट्रांसेंडेंटलिज़्म रोमांटिकवाद को अपनाने जैसा है।

और आप जानते हैं कि सांस्कृतिक रूप से, यह उस तरह का आंदोलन है जो 19वीं सदी में ज्ञानोदय के युग के बाद हुआ था। इसलिए, वे इसे अपना रहे हैं। तीसरा, ट्रांसेंडेंटलिस्ट अंतर्ज्ञान द्वारा धार्मिक सत्य पर जोर देते हैं।

धार्मिक सत्य आपके अंतर्ज्ञान से और आपके अनुभव से आपके पास आ सकता है। आपको धार्मिक सत्य को किसी तरह के तर्कसंगत प्रमाण से साबित करने की ज़रूरत नहीं है। और आपको उन धार्मिक सत्यों को बाइबल नामक किसी पुस्तक में खोजने की ज़रूरत नहीं है।

वास्तव में, कई ट्रांसेंडेंटलिस्टों के लिए, आपको चर्च नामक किसी चीज़ में धार्मिक सत्य को खोजने की ज़रूरत नहीं है। आप उस धार्मिक सत्य को अपनी सहज भावनाओं और अपने सहज आंतरिक ज्ञान में पा सकते हैं। वह धार्मिक सत्य आपके पास आ सकता है।

चौथा, बेशक, वे मानते हैं कि भगवान हर व्यक्ति के दिल में है। मुझे ठीक से नहीं पता कि इसका क्या मतलब है, लेकिन भगवान हर व्यक्ति के दिल में है। भगवान हमारे आस-पास ही हैं।

यह एक तरह से ट्रांसेंडेंटलिज़्म की सर्वोच्च आत्मा है। भगवान हर व्यक्ति के दिल में है। इसलिए यह एक तरह का हृदय धर्म है।

इसे व्यवस्थित करने की ज़रूरत नहीं है। आपको किसी किताब की ज़रूरत नहीं है। आपको बाइबल की ज़रूरत नहीं है।

आपको किसी चर्च की ज़रूरत नहीं है। आपको किसी इमारत की ज़रूरत नहीं है। यह हर किसी के दिल में है।

और साथ ही, पाँचवाँ नंबर, जो आप यहाँ देख रहे हैं, ईश्वर प्रकृति में भी निवास करता है। ये लोग, ट्रांसेंडेंटलिस्ट, कुछ मायनों में लगभग सर्वेश्वरवादी भी थे, कि ईश्वर प्राकृतिक दुनिया में समाहित है। तो, यहाँ आप प्राकृतिक दुनिया में ईश्वर को पा सकते हैं।

तो, ट्रान्सेंडेंटलिज़्म एक तरह से यूनिटेरियनवाद से अलग है। अब, इनमें से कुछ ट्रान्सेंडेंटलिज़्म अभी भी यूनिटेरियन चर्च में जाते थे, इसलिए यह पूरी तरह से अलग नहीं है। हालाँकि, ट्रान्सेंडेंटलिज़्म यूनिटेरियनवाद से बाहर का एक आंदोलन है जो इस तरह की चीज़ों पर ज़ोर देता है, और राल्फ़ वाल्डो इमर्सन की सबसे अच्छी अभिव्यक्ति यह है कि

ठीक है, अब सवाल यह है कि यूनिटेरियन क्या मानते हैं? यही वह है जिसे हम समझना चाहते हैं। दुर्भाग्य से, आप यूनिटेरियन को इस आधार पर पहचान सकते हैं कि वे क्या नहीं मानते हैं, न कि वे क्या मानते हैं। वैसे भी, वे क्या मानते हैं? ओह, मेरा मतलब यह बताना था कि ऐसा करने से पहले, वे क्या मानते हैं? ऐसा करने से पहले, मैं आपको यहाँ एक और तस्वीर दिखाता हूँ।

1961 में यूनिटेरियन यूनिवर्सलिस्ट के साथ एकजुट हो गए। इसलिए, यूनिटेरियन और यूनिवर्सलिस्ट 1961 में एक साथ आए और यूनिटेरियन यूनिवर्सलिस्ट संप्रदाय नामक संप्रदाय का गठन किया। इसलिए, इन न्यू इंग्लैंड गांवों के केंद्र में आप जो यूनिटेरियन चर्च देखते हैं, वे यूनिटेरियन-यूनिवर्सलिस्ट चर्च हैं।

और मुख्यालय बोस्टन में ही है, अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय। वहाँ उनका झंडा है, नीला झंडा। और दाईं ओर, आप स्टेटहाउस देख सकते हैं।

तो, आप देख सकते हैं कि आप यहाँ कहाँ हैं, जहाँ हम उस मुख्यालय के पास से गुज़रने जा रहे हैं और वहाँ पहुँचने पर उसे दिखाएँगे। लेकिन हाँ। वह वर्ष कौन सा था? 1961।

1961, हाँ। ठीक है, मैं इसका ज़िक्र करना चाहता था। ठीक है।

अब, यूनिटेरियन क्या मानते हैं? यही सवाल है। और आपको 10 सेकंड का ब्रेक चाहिए। नहीं, पाँच सेकंड का ब्रेक।

आज तो बस बुधवार है। पाँच सेकंड। बुधवार को आपको बस इतना ही मिलता है।

यह पाँच सेकंड है। भगवान आपका भला करे। यह आंदोलन इन लोगों द्वारा ही स्थापित किया गया था।

वे क्या मानते हैं? ठीक है। मैं आठ बातों के बारे में बताने जा रहा हूँ जिन पर वे विश्वास करते हैं। दुर्भाग्य से, उनमें से कुछ नकारात्मक हैं।

तो, यह वही है जो वे यूनिटेरियनवाद को परिभाषित करने के खिलाफ प्रतिक्रिया कर रहे हैं। ठीक है। चलिए एक सकारात्मक बात से शुरुआत करते हैं।

यूनिटेरियन अपने पड़ोसी से प्यार करने में विश्वास करते थे। वे दान-पुण्य के काम में विश्वास करते थे। तो यह एक अच्छी बात है।

तो, हम सकारात्मक रूप से शुरुआत करेंगे। वे दान में विश्वास करते थे। वे अपने पड़ोसी से प्रेम करने में विश्वास करते थे और इसी तरह की अन्य बातें।

हाँ, हम अभी भी अमेरिका में यूनिटेरियनिज्म के अंतर्गत हैं। तो अब ये सिर्फ़ कुछ लोग हैं, वे क्या मानते हैं? वे क्या मानते हैं? हाँ। तो, सबसे पहले, वे धर्मार्थ कार्य में विश्वास करते थे।

वे अपने पड़ोसी से प्यार करने में विश्वास करते थे। मुझे लगता है कि यह बहुत अलग होगा। अगर आप किसी यूनिट में जाते हैं, तो मैं कुछ दिन पहले ही एंडोवर में घूम रहा था, और मैं यूनिटेरियन यूनिवर्सलिस्ट चर्च के पास से गुजरा और चर्च के साइनेज और हर चीज को बहुत ध्यान से देखा, जो कि धर्मार्थ कार्यों और समाज को बेहतर बनाने के लिए बहुत कुछ करने में शामिल है, इस तरह की चीजें।

तो यह नंबर एक है। नंबर दो, ज़ाहिर है, त्रिदेवों का इनकार है। यहीं पर वे वास्तव में ऐतिहासिक ईसाई धर्म से अलग हो जाते हैं।

वे त्रिदेव को नकारते हैं। यह त्रिदेव का नकार है। ठीक है।

नंबर तीन, जो नंबर दो से आगे आता है, प्रायश्चित का खंडन है। यह प्रायश्चित के सिद्धांत का खंडन है। यदि वह प्रायश्चित सार्वभौमिक होने वाला है तो आपको प्रायश्चित की आवश्यकता नहीं है।

अगर जब सब मर जाएँगे, तो आप जाएँगे और भगवान के पास जाएँगे। आपको इस दुनिया में किसी प्रायश्चित की ज़रूरत नहीं है। तो यह प्रायश्चित का खंडन है, खास तौर पर बेशक, क्रूस पर मसीह की मृत्यु द्वारा बताए गए प्रायश्चित का।

सही है। वे मानते हैं कि यीशु एक अच्छे इंसान हैं, एक नैतिक इंसान हैं, एक नैतिक इंसान हैं। उनका मानना है कि वे वास्तव में जीवित थे।

वह कुछ हद तक भविष्यवक्ताओं की तरह है। इसलिए, वे मानते हैं कि वह वास्तव में जीवित था। आत्मा के बारे में बात करने में उन्हें खुशी होती है, लेकिन वह उनके लिए त्रिदेव का तीसरा व्यक्ति नहीं है।

आत्मा सिर्फ़ ईश्वर की आत्मा है जो प्राकृतिक दुनिया में काम करती है या ईश्वर हमारी आत्माओं, हमारे शरीरों और इसी तरह के अन्य स्थानों में काम करता है। तो, उनके लिए, वह आत्मा है। अब, अगर आप इस दूसरे व्यक्ति, त्रिदेव के दूसरे व्यक्ति को लें, तो हम सभी इसे जानते हैं, है न, सिर्फ़ ईसाई धर्म से?

यीशु एक अच्छे इंसान हैं। वह एक नैतिक इंसान हैं। वह एक अच्छे इंसान हैं।

आपको यीशु जैसा होना चाहिए। सीएस लुईस ने मेरे ईसाई धर्म में इस बारे में क्या कहा? वह या तो पागल है या भगवान। लुईस ने कहा कि आप यीशु के मामले में कभी भी यह मध्यम मार्ग नहीं अपना सकते।

यह असंभव है क्योंकि या तो वह वही है जो उसने कहा था, वह भगवान है, या वह एक पागल है क्योंकि वह एक ऐसा व्यक्ति है जो कहता रहा कि वह भगवान है और वही काम करता है जो भगवान करते हैं और सब कुछ। तो वह भगवान है या पागल। इसलिए सीएस लुईस लोगों को वह मध्य मार्ग अपनाने नहीं देंगे, लेकिन यूनिटेरियन यूनिवर्सलिस्ट ने मूल रूप से वह मार्ग अपनाया है और यीशु पर खड़े हैं।

अच्छे नैतिक व्यक्ति और अच्छे भविष्यवक्ता। हमें उनसे कुछ बातें सीखनी चाहिए। हाँ।

ठीक है। तो, यह प्रायश्चित का खंडन है। हाँ, अलेक्जेंडर।

हाँ, यूनिटेरियन। मुझे यह देखना होगा कि वे कितने देशों में काम करते हैं, लेकिन इंग्लैंड में अभी भी यूनिटेरियन चर्च हैं। मैं इंग्लैंड में यूनिटेरियन चर्चों के पास से गुज़रा।

हाँ। और क्या आपको नहीं पता, यह बोस्टन होगा? यह हमारे पिछवाड़े में यूनिटेरियनवाद का गढ़ होगा।

ठीक है. हाँ. हाँ.

यह एक अच्छा सवाल है क्योंकि भले ही विलय 1961 तक नहीं हुआ था, लेकिन आप जानते हैं, हमारे समय में, 20वीं सदी में, यूनिटेरियन पहले से ही मूल रूप से यूनिवर्सलिस्ट थे। इसलिए, यह बहुत स्वाभाविक था कि वे एक साथ आएंगे, और आखिरकार वे एक साथ आए। उन्हें थोड़ा समय लगा, लेकिन आखिरकार वे एक साथ आए।

हाँ। किस लिए? हाँ। मुझे फ्रीमैन के पास वापस जाना है और उसे लाना है। हाँ। यहाँ। उफ़। वह वहीं है। हाँ। फ्रीमैन 1759, 1835 है।

ठीक है। चौथा, यूनिटेरियन मूल पाप के सिद्धांत पर विश्वास करते थे या उसे नकारते थे, मुझे कहना चाहिए। उन्होंने मूल पाप के सिद्धांत को नकार दिया।

कोई मूल पाप नहीं है। लोग गलतियाँ करते हैं। हो सकता है कि लोग ऐसा करें, और हो सकता है कि कुछ लोग पाप भी करें।

यह एक संभावना है। लेकिन मूल पाप, पाप एक वंशानुगत बीमारी है जो आदम से विरासत में मिली है। आप जानते हैं, ऐसा बिल्कुल नहीं है।

तो, उन्होंने मूल पाप के सिद्धांत को नकार दिया। तो हाँ। हाँ।

ठीक है। जेम्स फ्रीमैन। ठीक है।

हाँ, बिल्कुल सही। वह किंग्स चैपल के एंग्लिकन पादरी थे।

और 1885 में, वे चले गए, उन्होंने रखा, वे चैपल में रहे, लेकिन 1885 में, वे चले गए, वे यूनिटेरियनवाद में एक मण्डली के रूप में शामिल हो गए, उनके पुजारी के रूप में, उनके , मुझे कहना चाहिए, उनके मंत्री के रूप में। यही कारण है कि वह इतना महत्वपूर्ण है: यह अमेरिका का पहला चर्च है जो यूनिटेरियन बन गया, किंग्स चैपल। हाँ।

क्या इससे मदद मिलती है, फ्रीमैन? हाँ। ठीक है। तो, कोई मूल पाप नहीं है।

एक तरह से इन लोगों के लिए पाप बाहर है। ठीक है। एक और बात जिस पर हमें ध्यान देना चाहिए वह है पांचवीं बात, कि उन्होंने पूर्वनियति के सिद्धांत को नकार दिया।

वे चुनाव, पूर्वनियति और दोहरे चुनाव की प्यूरिटन कैल्विनिस्ट समझ के खिलाफ लड़े। उन्होंने इन सब बातों से इनकार किया। इसलिए, वे वास्तव में कैल्विनिस्टों के साथ युद्ध में हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि बहुत से कारणों से, लेकिन इस कारण से भी। ठीक है। नंबर छह, उन्होंने विकसित किया, शायद पूरी तरह से सचेत रूप से नहीं, लेकिन उन्होंने अच्छे नैतिक मूल्यों द्वारा एक तरह का मोक्ष विकसित किया, नैतिकता द्वारा मोक्ष, एक अच्छा इंसान होने से मोक्ष, कि इस तरह आप खुद को भगवान के साथ एक अच्छे रिश्ते में रखते हैं।

तो, यह एक तरह से एक चरित्र द्वारा मोक्ष बन गया। तो कर्म द्वारा मोक्ष। तो शायद उनका इरादा रोमन कैथोलिकों और कर्म द्वारा मोक्ष का अनुसरण करने का नहीं था, लेकिन यह इसी तरह हुआ।

हाँ। आखिरकार, हर कोई अभी भी बचा हुआ है। अब, अगर आप बोस्टन में यूनिटेरियन प्रचारक विलियम एलेरी चैनिंग के पास जाएँ, तो वह अपने चर्च में प्रचार कर रहे हैं।

अगर वह किसी ऐसे व्यक्ति को देखता है जो पूरी तरह से निंदनीय है, कोई ऐसा व्यक्ति जो वास्तव में पापी है और ईश्वर के प्रति क्रोधित है, तो वह उसे उपदेश देगा, लेकिन वह जानता है कि अगर वह इस जीवन में नहीं बचा, तो परलोक में उसे शुद्धिकरण के दौर से गुजरना पड़ेगा, लेकिन अंततः वह ईश्वर के पास जाएगा। इसलिए, वे आश्वस्त हैं कि ऐसा होने वाला है। हाँ।

इसका एक अच्छा उदाहरण हार्वर्ड डिविनिटी स्कूल है। वे हार्वर्ड डिविनिटी स्कूल जाते हैं। उन्हें मास्टर डिग्री मिलती है।

वे यूनिटेरियन यूनिवर्सलिस्ट मंत्रालय में नियुक्त हो जाते हैं। हाँ, वे मंत्री हैं। वे नियुक्त मंत्री हैं।

अब, एक बात जो यूनिटेरियनवाद ने की है, मैं कहूंगा कि यूनिटेरियनवाद इस तथ्य को स्वीकार करता है और इसके बारे में ईमानदार है कि वे रूढ़िवादी ईसाई नहीं हैं। वे रूढ़िवादी ईसाई धर्म

के साथ नहीं जुड़ते। इसलिए मुझे लगता है कि वे कभी-कभी खुद को ईसाई कहने से सावधान रहते हैं, रूढ़िवादी अर्थ में तो बिल्कुल भी नहीं।

ठीक है। फिर भी, कुछ और बातें हैं जिन पर उन्होंने विश्वास किया या नहीं किया या विश्वास करते हैं या नहीं करते। ठीक है।

आखिरी से अगली बात जो हम पहले ही बता चुके हैं। अगर बाइबल के बारे में उनका कोई नज़रिया है, तो वे बाइबल के बारे में बहुत ही कमतर नज़रिया रखते हैं। अगर कोई नज़रिया है, तो यह निश्चित रूप से एक कमतर नज़रिया है।

इसलिए, मैं जो शब्द इस्तेमाल करूँगा वह यह है कि बाइबल कोई अधिकार नहीं है, यूनिटेरियन यूनिवर्सलिज्म के लिए अधिकार का स्रोत नहीं है। अगर आपके पास यूनिटेरियन हैं जो बाइबल या बाइबल के कुछ हिस्सों को पढ़ते हैं, अगर आपके पास यूनिटेरियन प्रचारक हैं जो बीटिट्यूड्स से प्रचार कर सकते हैं या ईश्वर से प्रेम करने आदि से प्रचार कर सकते हैं, तो यह ठीक है। लेकिन वह यूनिटेरियन प्रचारक कभी नहीं कहेगा कि बाइबल सत्य के लिए ईश्वर का अधिकार है।

तो, वे ऐसा कभी नहीं कहेंगे। हाँ। ठीक है।

खैर, जब हम सोचते हैं तो सिद्धांत एक शब्द नहीं है... हाँ। ठीक है। एक तरह से... हाँ।

सिद्धांत है... हाँ। ठीक है। तो, वे क्या करेंगे... यह मुझे मेरे अंतिम बिंदु पर ले जाएगा।

तो क्यों न मैं यह बात कहूँ, और फिर हम देखेंगे कि वे यहाँ कैसे जाते हैं? उनके पास तर्क के बारे में एक उच्च दृष्टिकोण है, तर्कसंगतता के बारे में एक उच्च दृष्टिकोण है, और हमारे द्वारा सत्य को निर्धारित करने के लिए हमारे तर्क का उपयोग करने में सक्षम होने के बारे में एक उच्च दृष्टिकोण है। अब मैं कबूल करता हूँ, यहाँ मैं यूनिटेरियनवाद पर व्याख्यान दे रहा हूँ, लेकिन मैं कबूल करता हूँ कि मैं वास्तव में कभी यूनिटेरियन सेवा में नहीं गया हूँ और न ही उपदेशक को देखा है, सुना है, इत्यादि।

मुझे कभी-न-कभी ऐसा करना चाहिए। मुझे बस इसमें दिलचस्पी होगी। लेकिन मेरा संदेह है कि यूनिटेरियन सेवा में, उपदेशक जिस पर भरोसा करने जा रहा है, वह आपके पड़ोसी के प्रति अच्छा होने के बारे में एक तर्कपूर्ण तर्क है या एक अच्छा नैतिक व्यक्ति होने के बारे में एक तर्कपूर्ण तर्क है क्योंकि यह आम भलाई के लिए अच्छा है।

तो यह मेरा संदेह है। हो सकता है कि मैं गलत होऊँ, लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगता। ठीक है।

तो यह है यूनिटेरियनिज्म, अमेरिकी यूनिटेरियनिज्म। तो सबसे पहले, पृष्ठभूमि और फिर दूसरी बात, अब अमेरिका की बात करते हैं। तो, मुझे कुछ मिनट के लिए रुकना चाहिए।

हम जिस चीज़ में सबसे ज़्यादा दिलचस्पी रखते हैं, वह है इस चीज़ को अमेरिकी ईसाई धर्म में पहचानना। तो, क्या आपके पास फ्रीमैन या विलियम एलेरी चैनिंग के बारे में कोई सवाल है? बहुत

महत्वपूर्ण। अमेरिकी ईसाई धर्म में एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति ने इस चीज़ को आकार दिया या यूनिटेरियनवाद के बारे में, बस सामान्य तौर पर, वे क्या मानते हैं।

क्या आपके पास यहाँ कोई सवाल है? ठीक है। तो, परीक्षा, यहाँ परीक्षा समाप्त होती है। पहले घंटे की परीक्षा यहीं समाप्त होती है।

तो, आपके पास व्याख्यान एक से छह तक हैं। तो, हम ठीक चल रहे हैं। इससे आपको अपने व्याख्यानों से परीक्षा के लिए तैयार होने के लिए कुछ दिन मिल जाते हैं।

हाँ. उफ़. हाँ.

राल्फ वाल्डो इमर्सन और लेक्सिंगटन और कॉनकॉर्ड के कुछ बुद्धिजीवियों ने उनका नाम लिया। मैंने उनका नाम इसलिए लिया क्योंकि आप साहित्य और अन्य क्षेत्रों में उनके नाम से परिचित होंगे। हालाँकि, कुछ लोगों ने ट्रान्सेंडेंटलिज़्म नामक इस आंदोलन की स्थापना की, जो एक बहुत ही कुलीन बौद्धिक आंदोलन था।

मेरा मतलब है, ये लोग कवि और लेखक और विचारक वगैरह थे। तो यह निश्चित रूप से किसी के लिए आंदोलन नहीं था। तो, यह एक बहुत शक्तिशाली बौद्धिक आंदोलन था।

ट्रान्सेंडेंटलिज़्म का अमेरिकी व्यापक संस्कृति पर वास्तविक प्रभाव है, ज़रूरी नहीं कि ईसाई संस्कृति पर, लेकिन व्यापक संस्कृति पर, क्योंकि ये लोग साहित्यिक प्रतिभा वाले और साहित्यिक लोग थे जिन्हें लोग पढ़ रहे थे। तो इस तरह से इसका व्यापक संस्कृति पर प्रभाव पड़ा। हाँ।

यहाँ कुछ और भी है। आप समझिए कि हम यहाँ कहाँ हैं। आप समझिए कि हम परीक्षा के लिए कहाँ हैं।

ठीक है। भगवान आप सबका भला करे। मुझे नहीं लगता कि मैं आज पाँच मिनट शेष रहते दूसरा महान जागरण शुरू करूँगा।

मैं आपको शुक्रवार को एक और कप कॉफी और प्रश्न लेने के लिए पाँच मिनट देने जा रहा हूँ। शुक्रवार को किताबें लेकर आएँ, और हम आपको फिर से परीक्षा के लिए तैयार होने में मदद करेंगे।

यह डॉ. रोजर ग्रीन हैं जो अमेरिकी ईसाई धर्म पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 9 है, अमेरिकी एकतावाद का उदय। अमेरिकी क्रांति में धर्म।